**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# अशोक के फूल निबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**

**डॉ. दिनेश श्रीवास,**

सहा. प्राध्यापक हिंदी,

शा. इ.वि.पी.जी. महाविद्यालय,

कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

## शोध सार

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित "अशोक के फूल" एक ललित और सांस्कृतिक निबंध है। भारतीय साहित्य और समाज में अशोक पुष्प किस प्रकार आया, इस पर विचार करते हुए कहा गया कि ऐसा तो कोई नहीं कह सकता कि कालिदास के पूर्व भारत में इस पुष्प को कोई नहीं जानता था। यह पुष्प कालिदास के काव्य में अपूर्व शोभा और सुकुमारता के साथ वर्णित हुआ है। अशोक वृक्ष और उसके फूलों के माध्यम से भारत के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, जीवन दृष्टि, धर्म, संसाधनों तथा विभिन्न जातियों के विषय में जानकारी दी गई है। इस निबंध में मानव की जीवन जीने की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि मानव की जीवनी शक्ति अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों को रौंदते हुए आगे बढ़ती जाती है। इसी से समाज और संस्कृति का रुप परिवर्तित होते रहता है। इसी परिवर्तन ने अशोक वृक्ष के महत्त्व को भी भुला दिया। लेखक अशोक के फूल के वैभवशाली अतीत का स्मरण करते हैं परंतु कोई भी बहुमूल्य संस्कृति सदैव नहीं बनी रह सकती है। परिवर्तन इस संसार का नियम है। लेखक का मानना है कि अशोक आज भी उसी मस्ती में झूम रहा है, जैसा कि वह दो हजार वर्ष पहले था। अतः कहीं भी कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी नहीं बदला है, जो भी परिवर्तन हुआ है, वह मानव की मनोवृत्ति बदलने के फलस्वरुप हुआ है। इसे मानव की स्वार्थपरता या अवसरवादिता कहने की अपेक्षा विकासशील दृष्टि मानते हुए मानवीय ही मानना चाहिए। यही आचार्य जी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि का मूल है।

## मुख्य शब्द

दुर्दम, अनाहत, जिजीविषा, निर्मम, कर्णावतंस, सहृदय.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित ''अशोक के फूल'' एक ललित और सांस्कृतिक निबंध है। भारतीय साहित्य और समाज में अशोक पुष्प किस प्रकार आया, इस पर विचार करते हुए कहा गया कि ऐसा तो कोई नहीं कह सकता कि कालिदास के पूर्व भारत में इस पुष्प को कोई नहीं जानता था। यह पुष्प कालिदास के काव्य में अपूर्व शोभा और सुकुमारता के साथ वर्णित हुआ है। अशोक वृक्ष और उसके फूलों के माध्यम से भारत के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, जीवन दृष्टि, धर्म, संसाधनों तथा विभिन्न जातियों के विषय में जानकारी दी है। इस निबंध में मानव की जीवन जीने की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि मानव की जीवनी शक्ति अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों को रौंदते हुए आगे बढ़ती जाती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस निबंध में अशोक पुष्प के गौरवमयी अतीत और महत्त्व को वर्णित करते हुए तत्कालीन समाज की संस्कृति को प्रकाशित किया है। इस निबंध का मुख्य विचार बिन्दु भारतीय साहित्य, संस्कृति, दर्शन और इतिहास बोध रहा है। द्विवेदी जी ने संस्कृति के बनने–बिगड़ने की प्रक्रिया का विवेचन किया है और मानव की जीवनी शक्ति को परिष्कृत व महत्त्वपूर्ण माना है। प्रस्तुत निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की कई विशेषताएं यथा पाण्डित्य, विचारक व मानवतावादी दृष्टिकोण तथा भारतीय इतिहास, साहित्य, संस्कृति और दर्शन के प्रति आस्था आदि अभिव्यक्त हुई है। ललित निबंध और भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रस्तुत निबंध में अशोक पुष्प के प्रति सहृदयता से विचार किया है। अशोक के फूल को देखकर लेखक के मन में जो विचार और भावनाएँ उत्पन्न हुए हैं, उसमें उनकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि भी समाहित है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित अशोक के फूल न केवल ललित निबंध अपितु सांस्कृतिक निंबध भी है। इस निबन्ध में द्विवेदी जी ने अशोक के फूल का सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक महत्व स्थापित किया है। साथ ही उन्होंने अपनी बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर की लोगों द्वारा उपेक्षा करने की ओर भी संकेत किया है। निबंध में वर्णित विषय को निम्नलिखित बिन्दुओं में बताया जा सकता हैः

1. **अशोक के फूल के माध्यम से परिवर्तन और विकास का पाठः–** वास्तव मे लेखक ने निंबध के माध्यम से परिवर्तन और विकास का पाठ ही पढ़ाया है। ईसवी सन् के आरंभ होने के साथ ही अशोक का पुष्प हमारे भारतीय धर्म, साहित्य और समाज में प्रवेश कर गया। यह वही काल था जब भारतीय धर्म साधना अपने नये रूप को प्राप्त कर रही थी। विद्वानों का कथन है गंधर्व तथा वस्तुत दोनों एक ही शब्द हैं, बस उनका उच्चारण अलग–अलग है। आगे लेखक कहता है कि यह अशोक का फूल अब काम आया। इसने अपनी शक्ति से बौद्ध धर्म को घायल कर दिया। शैव मार्ग को भी अभिभूत कर दिया और शाक्य साधना को भी झुका दिया। इसका प्रमाण है– कौल साधना, कापालिक मत तथा बज्रयान शाखा। लेखक यह बताने में सफल रहा है कि चाहे धर्म साधना हो या कोई पद्धति सब परिवर्तनशील है।
2. **पहाड़ी जातियों का उल्लेखः–** खुदाई के दौरान कई स्थानों से यक्षिणी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। भरहुत, साँची और मथुरा से जो यक्षिणी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इन मूर्तियों का गठन व बनावट इस तरह का है कि इन्हें देखने से यह ज्ञात होता है कि ये जातियाँ पहाड़ी थीं। हिमालय का प्रदेश अत्यंत सुन्दर था। अतः यह हिमालय प्रदेश ही गंधर्व या और अप्सराओं की निवास भूमि है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन पहाड़ी जातियों का समाज इस प्रकार का था या उस स्तर का था, जिसे आजकल के विद्वान पुना–लुअन सोसाइटी कहते हैं।
3. **आर्य–अनार्य की चर्चाः–** आर्य लोग यहाँ के मूल निवासी नहीं थे। वे बाहर से आये थे जब आर्य लोग यहाँ आए तो उन्होंने पहले से निवास कर रही यहाँ की जातियों से युद्ध किया। यहाँ पर पहले से निवास करने वाली जातियों में कुछ बड़ी गर्वीली थीं। वे कभी भी हार मानने को तैयार नहीं हुई। बाद के साहित्य में उन जातियों का स्मरण बड़े ही घृणा के साथ किया गया, जो बड़ी गर्विली थीं। जो जातियाँ बाहर से आये हुए आर्यों से सहज भाव से मिली और आर्यों की मित्र बन गईं। उन जातियों के प्रति आर्यों के मन में कोई घृणा या उपेक्षा का भाव नहीं रहा। असुर, राक्षस, दानव और दैत्य प्रथम श्रेणी में आते हैं, अर्थात् ये बड़ी गर्विली जातियाँ थीं और हार मानने वाली नहीं थीं। यक्ष, किन्नर, सिद्ध, वानर, भालू आदि जातियाँ दूसरी श्रेणी में आती हैं। इन जातियों ने आर्यों से सहज ही मित्रता कर ली। ये जातियाँ बाहर से आये हुए उन आर्यों से सहज भाव से मिल जुलकर रहने लगीं। बाद का हिंदू समाज इन दुसरी श्रेणियों की जातियों (यक्ष, किन्नर, सिद्ध वानर, भालू) को अद्भुत शक्तियों का केंद्र मानता है और यह कहता है कि इनमें देवताओं के गुण हैं। इनमें देव बुद्धि का पोषण होता है।
4. **संसार की प्रवृत्तिः–** यह संसार की प्रवृत्ति है कि जिससे और जब तक काम निकलता रहता है, तब तक तो उसे याद करती है और जैसे ही उसका स्वार्थ निकला कि उसे भूल जाती है इसीलिए कहते हैं कि दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है, जितने से स्वार्थ सधता है उतना ले लेती है बाकी सब फेंककर आगे की तरफ बढ़ जाती है। लगता है कि अशोक के पुष्प से उसका स्वार्थ सधा नहीं, तभी तो उसे भुला दिया गया। यह संसार

अशोक के पुष्प को क्यों याद रखें? संसार स्वार्थी है। ये सारा संसार ही स्वार्थ का अखाड़ा है। इस अखाड़े में हर पहलवान स्वार्थी है।

5. **भारतीय संस्कृति : विश्व की अनेक संस्कृतियों का मिश्रणः–** लेखक ने भारत को विचित्र देश माना है, क्योंकि यहाँ की संस्कृति विश्व की अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है। भारत में समय–समय पर अनेक जातियाँ असुर, आर्य, शक, हूण, नाग, गन्धर्व आदि आईं और यहीं पर बस गईं। ये जातियाँ यहाँ पर रहकर वापस चली गई और अपनी संस्कृति का गहरा प्रभाव भारतीय संस्कृति पर छोड़ गईं। इन सभी का भारतीय संस्कृति के विकास एवं समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान है। आज समूचे विश्व में हिन्दू रीति–नीति के नाम से जो भारतीय संस्कृति प्रसिद्ध है, वह वास्तव में आर्यों एवं यहाँ रहने वाली अनेक दूसरी जातियों का मिला–जुला रूप है। इसमें विभिन्न जातियों की संस्कृति का मिश्रित रूप दृष्टिगोचर होता है।

6. **नवीन युग का संदेशः–** भारतीय परम्परा में अशोक के फूल दो प्रकार के होते हैं–श्वेत एवं लाल पुष्प। श्वेत पुष्प तांत्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए उपयोगी हैं, जबकि लाल पुष्प स्मृतिवर्धक माना। द्विवेदीजी का मानना है कि मनोहर, रहस्यमय एवं अलंकारमय दिखने वाला अशोक का वृक्ष विशाल सामन्ती सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक है। सामन्ती व्यवस्था के ढह जाने के साथ–साथ अशोक के वृक्ष की महिमा नष्ट होने लगी। उसी प्रकार जिस प्रकार नये युग में सामंती प्रवृत्तियां नष्ट होने लगीं और उसके स्थान पर मध्य वर्ग के सामान्य जन का उदय हुआ।

7. **मनुष्य की जिजीविषा अमर हैः–** हजारी प्रसाद जी मानते हैं कि मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा (जीने की इच्छा) है। लेखक का मानना है कि दुनिया की सारी चीजें मिलावट से पूर्ण हैं। कोई भी वस्तु अपने विशुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है। इसके बावजूद, केवल एक ही चीज़ विशुद्ध है और वह है मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा। वह गंगा की अबाधित–अनाहत धारा के समान सब कुछ हज़म करने के बाद भी पवित्र है। मानव जाति की दुर्दम, निर्मम धारा के हजारों वर्षों का रूप देखने से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य की जीवन–शक्ति बड़ी ही निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है, न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती–बहाती हुई यह जीवनधारा आगे बढ़ी है।

8. **सभ्यता और संस्कृति निरन्तर परिवर्तनशीलः–** लेखक कहता है कि आज जिस संस्कृति को हम बहुमूल्य मान रहे हैं, वह हमेशा ऐसी ही नहीं बनी रहेगी। संसार का नियम रहा है कि समय के साथ–साथ सब कुछ बदलता रहता है। आज जो वस्तु अथवा परम्परा है, वह कल अवश्य परिवर्तित होगी और तब वह एक भिन्न रूप में हमारे सामने उपस्थित होगी। यही बात संस्कृति पर भी लागू होती है। किसी समय सम्राट और सामन्तों ने जिस संस्कृति को जन्म दिया था, वह मनमोहक और व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर देने वाला था पर समय के साथ–साथ एक दिन वह समाप्त हो गई। इसके पश्चात् धर्म के आचार्यों ने जिस ज्ञान और वैराग्य को बहुमूल्य समझा उसे समाज में प्रतिष्ठित भी किया, परन्तु उसका अस्तित्व भी धीरे–धीरे समाप्त हो गया। मध्ययुग में मुस्लिम शासकों के अनुकरण पर जो रसिक संस्कृति समाज में उमड़ी, वह भी भाप बनकर न जाने कहाँ उड़ गई? अर्थात् समाप्त हो गई। हमारी वर्तमान संस्कृति भी मध्ययुगीन रसिकता से निर्मित है और वह व्यवसायिक भी है, पर एक दिन इस व्यवसायिक संस्कृति का कमल भी मुरझाकर नष्ट हो जाएगा। समय बड़ा बलवान है, इसके प्रहार से आज तक कोई भी बच नहीं पाया है।

9. **बीती बात बिसार देः–** लेखक कहता है कि अशोक का फूल आज भी अपनी उसी मौज में है, जिसमें वह दो हजार वर्ष पहले था। उसका कहीं से भी कुछ नहीं बिगड़ा है। वह उसी मस्ती में हँस रहा है, वह उसी मस्ती में झूम रहा है, परन्तु जो लोग उसके महत्त्व को प्राचीन समय में देख चुके हैं वह उसकी महत्ता की क्षति को देख दुःखी होते हैं। उन दुःखी लोगों में से एक लेखक भी है, जो अशोक के फूलों की दुर्दशा देख आहत है। अन्ततः लेखक कहता है कि अशोक आज भी ज्यों का त्यों अपने अस्तित्व को लिए अपनी मस्ती में झूम रहा है। मनुष्य उसे देख अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार उससे आनन्दित हो सकता है तथा दुःखी भी। जैसे कालिदास और मैंने अपनी–अपनी मनोवृत्तियों के चलते उसमें रस का अनुभव किया। समय बदलता है

और हमें उसके अनुसार अपने मनोभावों को संचालित करते रहना चाहिए, न कि उस परिवर्तन को देखकर दुःखी होना चाहिए।

## 'अशोक के फूल' ललित निबंध की दृष्टि में

'अशोक के फूल' निबंध एक ललित निबंध है, जो ललित शैली में लिखा गया है। इस शैली में लेखक निजता, कलात्मकता तथा कल्पनाशीलता के प्रति सजग रहता है। इस निबंध में लेखक की निजता या व्यक्तित्व स्पष्ट दृष्टव्य होता है। वह अशोक के फूल की समृद्ध गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा को निरुपित करता है। लेखक अशोक वृक्ष को मनोहर, रहस्यमय और अलंकारमय बताने के साथ–साथ सांमत सभ्यता का भी प्रतीक बताता है, जो साधारण जन–मानस के परिश्रम व शोषण से समृद्ध हुई थी। लेखक का यह दृष्टिकोण उसकी निजता का ही परिणाम है।

ललित शैली की दूसरी विशेषता उसकी कलात्मकता में निहित है। इस निबंध में लेखक ने प्रस्तुतीकरण पर विशेष पर बल दिया है। कहीं उन्होंने अपनी बात सरल व सहज शब्दों से युक्त सरल वाक्यों तथा कहीं पर तत्सम शब्दावली और अर्थगाम्भीर्य को लिए हुए लम्बे वाक्यों में अपनी बात को कहा है। उनका सहृदय कवि रुप भी इस निबंध में व्यक्त हुआ है। जैसेः "सुन्दरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघातों से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रुप में झलकता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कन्धे से ही फूट उठता था।''

ललित निबंध की तीसरी विशेषता उसकी कल्पनाशीलता है। द्विवेदी जी के अधिकांश निबंध प्राकृतिक उपादान तथा सामान्य विषयों से संबंधित हैं। परंतु ये सभी निबंध अर्थ की दृष्टि से गम्भीर वैचारिकता देने वाले हैं। 'अशोक के फूल' निबंध में लेखक अशोक के छोटे–छोटे, लाल–लाल पुष्पों को देखकर उदास हो जाता है, वह भारतीय साहित्य और समाज में इस पुष्प के प्रवेश और निर्गम पर विचार करते हुए उसके वैभवशाली अतीत में खो जाता है। यह लेखक की कल्पनाशीलता ही है, कि वह अशोक वृक्ष की तह में जाकर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को निरूपित करते हुए सभ्यता व संस्कृतियों के बनने–बिगड़ने का रोचक वृतांत प्रस्तुत करता है। अतः यह निबंध निजता, कलात्मकता और कल्पनाशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

## अशोक के फूल ऐतिहासिक निबंध की दृष्टि में

द्विवेदी जी की इतिहासदृष्टि इस निबंध में स्पष्ट हुई है। उन्होंने इतिहास, पुराण, साहित्य आदि से गंभीर तथ्य लेते हुए उसको समसामयिकता से जोड़ा है। प्रस्तुत निबंध में उन्होंने कालिदास, बुद्ध, विक्रमादित्य, महादेव, राम, कन्दर्प, गन्धर्व, यक्ष, शैव मार्ग, शक्ति साधना, वज्रयान, कौल साधना, कापालिक, आर्य और आर्यत्तर जातियाँ, वामन पुराण, ब्राह्मण ग्रन्थ, महाभारत, अशोक कल्प, सरस्वती कण्ठाभरण, मालविकाग्निमित्र, रत्नावली आदि का उल्लेख किया है, जो उनके प्राचीन भारतीय इतिहास, साहित्य और संस्कृति बोध को प्रकट करता है। उनका यह पाण्डित्य निबंध को कठिन और बोझिल न बनाकर सहज बनाने में सहायक होता है।

इस निबंध में द्विवेदी जी का विचारक और मानवतावादी दृष्टिकोण भी स्पष्ट दिखाई देता है। वे किसी भी सामान्य विषय पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करते हुए उसे नए सामाजिक सन्दर्भ और आधुनिक युगबोध से जोड़ देते हैं। प्रस्तुत निबंध में अशोक वृक्ष का सांस्कृतिक महत्त्व बतलाते हुए वे मानव के संघर्ष को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। एक उदाहरण "संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का आज जो रुप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रुप है।'' निबंध के उपरोक्त अंश से यह स्पष्ट है कि समाज व संस्कृति के बनने बिगड़ने में मानव के संघर्ष की अहम भूमिका है। संघर्ष से ही मानव ने समाज व संस्कृति का निर्माण किया है। अतः इस निबंध में द्विवेदी जी के लेखकीय व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएं यथा भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति गहन आस्था, पाण्डित्य, विचारक व मानवतावादी दृष्टि आदि प्रकट होती हैं।

## इतिहास एवं संस्कृति का उत्कृष्ट समन्वय है अशोक के फूल

प्रस्तुत निबंध में अशोक पुष्प के गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हुए तत्कालीन भारतीय समाज व संस्कृति पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। आ० द्विवेदी जी के भारतीय संस्कृति, साहित्य व दर्शन के प्रति रुचि को इस निबंध में स्पष्ट महसूस किया जा सकता हैं। उनका निबंध सांस्कृतिक बहुलता का प्रमाण हैं, उनके अनुसार':–

रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को 'महामानवसमुद्र' कहा है। विचित्र देश है यह! असुर आये, आर्य आये, शक आये, हूण आये, नाग आये, यक्ष आये, गंधर्व आये न जाने कितनी मानव–जातियाँ यहाँ आयी और आज के भारतवर्ष के बनाने में अपना हाथ लगा गयीं। जिसे हम हिन्दु रीति–नीति कहते हैं, वह अनेक आर्य और आर्येतर उपादानों का मिश्रण है।"

अतः द्विवेदी जी भारतीय संस्कृति और प्राचीन इतिहास के प्रति आस्थावान हैं। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति का स्वरुप संकुचित, सीमित स्थान या काल विशेष के दायरे में न आकर अत्यन्त व्यापक है, जिसको किसी धर्म, जाति आदि में नहीं बाँधा जा सकता है।

## संस्कृति का पाठ

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस निबंध में अशोक पुष्प के महत्त्व के साथ–साथ पाठकों को भारतीय संस्कृति की विकास परम्परा से भी परिचित कराते हैं। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति के निर्माण में असुर, आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष तथा गंधर्व आदि अनेक जातियों का योगदान रहा है। आज हम जिस गौरवमयी संस्कृति की बात करते हैं, वह अनेक आर्य और आर्येत्तर जातियों का सम्मिश्रण है, यही भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है।

प्रस्तुत निबंध का मुख्य विचार बिन्दु भारतीय साहित्य, संस्कृति, दर्शन और इतिहास बोध रहा है। इसमें तत्कालीन युग की सामंत सभ्यता का चित्रण हुआ है। उस समय मदनोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता था, उसको सामंतों का संरक्षण प्राप्त था। द्विवेदी जी ने अशोक से वृक्ष को सामन्त सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक माना है, जो जनमानस के शोषण से विकसित हुई थी। कालान्तर में इन उत्सवों की धूमधाम समाप्त हो गई और अशोक के फूल के गौरवमयी अतीत को समाज भूल गया। इस निबंध में समाज व संस्कृति के बनने और बिगड़ने की प्रक्रिया पर भी चिंतन किया गया है। जगत् के परिवर्तित होने से समाज और संस्कृति भी परिवर्तित होती है। आज समाज का जो स्वरूप दिखाई देता है, उसको बनाने में कितने ही व्यक्तियों ने संघर्ष और त्याग किया है। जिस आधुनिक संस्कृति को आज हम बहूमूल्य समझ रहे हैं, वह भी परिवर्तित होगी और एक नया रूप धारण करेगी। इस बनने और बिगड़ने की प्रक्रिया में लेखक ने मानव के जीवन जीने की इच्छा को सबसे महत्त्वपूर्ण और शुद्ध माना है। सब कुछ में मिलावट है, सब कुछ अविशुद्ध हैं। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा (जीने की इच्छा)। उसका मानना है कि मानव इसी जीवनी शक्ति से समाज व संस्कृति का सृजन करता रहा है।

## निष्कर्ष

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस निबंध में अशोक पुष्प के गौरवमयी अतीत और महत्त्व को वर्णित करते हुए तत्कालीन समाज की संस्कृति को प्रकाशित किया है। इस निबंध का मुख्य विचार बिन्दु भारतीय साहित्य, संस्कृति, दर्शन और इतिहास बोध रहा है। द्विवेदी जी ने संस्कृति के बनने–बिगड़ने की प्रक्रिया का विवेचन करते हुए मानव की जीवनी शक्ति को परिष्कृत व महत्त्वपूर्ण माना है। प्रस्तुत निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की कई विशेषताएं यथा पाण्डित्य, विचारक व मानवतावादी दृष्टिकोण तथा भारतीय इतिहास, साहित्य, संस्कृति और दर्शन के प्रति आस्था आदि अभिव्यक्त हुई है।

ललित निबंध और भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रस्तुत निबंध में अशोक पुष्प के प्रति सहृदयता से विचार किया है। अशोक के फूल को देखकर लेखक के मन में जो विचार और भावनाएँ उत्पन्न हुए हैं, उसमें उनकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि भी समाहित है।

इस निबंध में मानव की जीवन जीने की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि मानव की जीवनी शक्ति अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों को रौंदते हुए आगे बढ़ती जाती है। इसी से समाज और संस्कृति का रुप परिवर्तित होते रहता है। इसी परिवर्तन ने अशोक वृक्ष के महत्त्व को भी भुला दिया। लेखक अशोक के फूल के वैभवशाली अतीत का स्मरण करते हैं परंतु कोई भी बहुमूल्य संस्कृति सदैव नहीं बनी रह सकती है। परिवर्तन इस संसार का नियम है। लेखक का मानना है कि अशोक आज भी उसी मस्ती में झूम रहा है, जैसा कि वह दो हजार वर्ष पहले था। अतः कहीं भी कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी नहीं बदला है, जो भी परिवर्तन हुआ है, वह मानव की मनोवृत्ति बदलने के फलस्वरुप हुआ है। इसे मानव की स्वार्थपरता या अवसरवादिता कहने की अपेक्षा विकासशील दृष्टि मानते हुए मानवीय ही मानना चाहिए। यही आचार्य जी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि का मूल है।

## संदर्भ सूची

1. शर्मा विनय मोहन (सं.), *नये निबंध,* कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1965।
2. नलिन जयनाथ, *हिन्दी निबंधकार,* आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1978।
3. सिंह फणीश, *हिन्दी साहित्य का परिचय,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1991।
4. भारती धर्मवीर (स.), *हिन्दी साहित्य कोश,* ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी,1985।
5. तिवारी रामचंद्र, *हिन्दी गद्य साहित्य,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1971।
6. शर्मा अनुराधा, *भारतीय साहित्य के निर्माता,* आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य अकादमी प्रकाशन, दिल्ली, 1999।
7. चतुर्वेदी रामस्वरूप, *हिन्दी गद्य साहित्य,* विन्यास और विकास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
8. चौहान कर्णसिंह, *साहित्य के बुनियादी सरोकार,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984।
9. चौहान शिवदान सिंह, *हिन्दी गद्य साहित्य,* राजकमल प्रकाशन, बम्बई, 1954।
10. जैन निर्मला, *हिन्दी आलोचना की बींसवी सदी,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,1986।
11. द्विवेदी रामअवध, *हिन्दी साहित्य के विकास की रुपरेखा,* भारती भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002।

——==00==——